पर्थारिणीम्। परिवत्सरायाविजाताम्। इद्वित्स-रायापस्तद्वरीम्। इद्वत्सरायातीत्वरीम्। वत्सराय विजेर्ज्ञराम्। सर्वेन्त्सराय पर्तिकीम्। वनाय वन-पम्। अन्यताऽरख्याय दावपम्॥ ११॥

सरोभ्यो धैवरम्। वेशं ताभ्योदाश्रम्। उपस्थाव-रीभ्यो वैदम्। नुबुलाभ्यः शौष्कलम्। पार्य्याय कैव-र्तम्। अवार्य्याय मार्गारम्। तीर्थभ्यं आन्दम्। विष-मेभ्यो मैनालम्। खनभ्यः पर्णकम्। गुहाभ्यः किरा-तम्। सानुभ्यो जम्भकम्। पर्वतिभ्यः किम्पूरुषम्॥१२॥

पृतिश्रुत्काया ऋतुत्वम्। घोषाय भषम्। अन्ताय बहुवादिनम्। अनन्ताय मूर्कम्। महंसे वीणावादम्। क्रीश्राय तूणवधाम्। आकन्दाय दुन्दुभ्याघातम्। अव-रस्पराय शङ्ख्याम्। ऋभुभ्या जिनसन्धायम्। साध्ये-भ्यश्रमम्णम्॥ १३॥

वीमतायै पौल्कसम्। भूत्यै जागर्णम्। अभूत्यै स्वपनम्। तुलायै वाणिजम्। वसीय हिर्ण्यकारम्। विश्वेभ्या देवेभ्यः सिधालम्। पश्चाद्दोषायं ग्लावम्। कृत्यै जनवादिनम्। व्यथ्या अप्रगल्भम्। सःश्रराय पृच्छिदम्॥ १४॥